बाइबल टीचर

वर्ष 17 | मई 2020 | अंक 6

सम्पादकीय

कलीसिया में हमारा व्यवहार

कई बार संडे की अराधना में शायद कुछ लोग पहली बार आते हैं या कभी कबार आते हैं। हम उनसें कैसे बातचीत करते हैं या हमारा व्यवहार उनके प्रति कैसा है? हमारा व्यवहार ऐसे लोगों के प्रति कैसा होना चाहिए?

क्योंकि हम मसीही है इसलिये हमें इस बात को बड़ी गंभीरता से लेना चाहिए कि कलीसिया में लोगों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा है? कई बार कलीसिया में जो व्यक्ति बड़े सुन्दर और महंगे कपड़े पहनकर आता है तो हम उसकी ओर अधिक ध्यान देते हैं। जैसे कि याकूब अपनी पत्री में लिखता है कि "हे मेरे भाइयों हमारे महिमायुक्ति प्रभु यीशु मसीह का विश्वास तुम में पक्षपात के साथ न हो क्योंकि यदि एक पुरुष सोने के छल्ले और सुन्दर वस्त्र पहिने हुए तुम्हारी सभा में आए और एक कंगाल भी मैले कुचेले कपड़े पहिने हुए आए। और तुम उस सुन्दर वस्त्र वाले का मुंह देखकर कहो कि आप वहां अच्छी जगह बैठ जाओ और उस गरीब कंगाल से कहो, कि तू यहां खड़ा रह या मेरे पांवों की पीढ़ी के पास बैठ जा, सो क्या तुम ने आपस में भेदभाव न किया और कुविचार से न्याय करने वाले न ठहरे"

हे मेरे प्रिय भाईयो, सुनो, "क्या परमेश्वर ने इस जगत के कंगालों को नहीं चुना कि विश्वास में धनी और उस राज्य के अधिकारी हो जिस की प्रतिज्ञा उसने उनसे की है जो उससे प्रेम करते हैं?" (याकूब 2:1-5)। कलीसिया में जो लोग गरीब है उनके प्रति हमारा व्यवहार कैसा है? यदि आप एक अगुवे हैं तो आपका व्यवहार कैसा है? कई बार हम इस बात में चूक जाते हैं और कई बार हमारी अराधना में लोग पहली बार आते है, तब हम उनसे कैसे मिलते हैं? हमें ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि हमारे बीच में उन्हें अच्छा लगे ताकि वे अगली बार भी हमारे यहां आयें। शायद कोई पहली बार आये और उसे गीत की किताब के बारे में जानकारी न हो तो हम उसे गीत की किताब देकर उसकी सहायता करें कि किस प्रकार से गीतों का नम्बर निकालना और गीतों को गाना है। उसके पास शायद बाइबल नहीं है, तब हम उसे बाइबल दे सकते हैं। यह छोटी-छोटी बातें हैं, परन्तु बड़ी ही आवश्यक है। यदि कोई पहली बार आया है तो उससे आप नाम पूछिये और उसका फोन नम्बर लेकर उसे अगली बार आने के लिये कहें। उनसे पूछिये आप कहां रहते हैं, परिवार में सब कुछ कुशल है। इन बातों से बहुत फर्क पड़ता है।

फिर एक और बात याद रखिये कि वह व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में एक बहुमूल्य आत्मा है, जिसे उद्धार की आवश्यकता है। यदि वे बाइबल के विषय में कुछ जानना चाहते हैं तो उनसे बातचीत कीजिये। उन्हें बताइये कि मसीह की कलीसिया क्या है और उसके सदस्य आप किस प्रकार से बन सकते हैं?

भविष्य में ऐसे लोगों से सम्पर्क कीजिये और उन्हें फिर से अराधना में आने का निमंत्रण दीजिये। उनका मोबाइल नम्बर लेना न भूलिये तथा उसके हाथ में कोई पर्चा या कलीसिया की पुस्तक दीजिये। शायद यह भी हो सकता है कि आप उनसे दोबारा न मिल पायें तब आप उनके घर जाकर उन्हें अराधना में आने का निमंत्रण दें सकते है। कई कलीसिया के अगुवे तथा सदस्य नये लोगों से मिलने का शीघ्र प्रयत्न करते हैं।

अराधना समाप्त होने के पश्चात आपस में मिलें और एक दूसरे की आत्मिक उन्नति के लिये प्रयास करें। कई स्थानों पर कई स्त्रियां तथा कई बार पुरुष भी एक दूसरे की बुराई करते हैं जो कि मसीही व्यवहार के लिये अनुचित है। याकूब कहता है कि "हे भाइयो, एक दूसरे की बदनामी न करो, जो अपने भाई की बदनामी करता है, या भाई पर दोष लगाता है, और यदि तू व्यवस्था पर दोष लगाता है तो तू व्यवस्था पर चलने वाला नहीं, पर उस पर हाकिम ठहरा।" (याकूब 4:11)।

जब हम मसीही बन जाते हैं तब हम बिल्कुल बदल जाते हैं। बाइबल कहती है कि मसीही लोग यीशु मसीह में नई सृष्टि है। (2 कुरि. 5:17)। पुरानी बातें और पुराना जीवन बपतिस्मा लेने के पश्चात बदल जाता है। प्रेरित पौलुस कहता है, जैसा यीशु मसीह का स्वभाव था वैसा तुम्हारा स्वभाव भी हो। (फिलि. 2:5)। हम अपने लिये नहीं जीते। (रोमियों 14:13-18) मसीहीयत की सुन्दरता इस बात में है कि हमारा व्यवहार कैसा है? हमारा व्यवहार यह दिखाता है कि हम वास्तव में मसीही है या फिर एक ढोंगी जैसा जीवन व्यतित कर रहे हैं। (रोमियों 12:15)।

मुझे पूरा प्रयत्न करना चाहिए कि मेरे व्यवहार से किसी मसीही भाई को ठोकर न लगे और इसलिये प्रेरित कहता है, "हे भाईयो, तुम स्वतंत्र होने के लिये बुलाए गए हो, परन्तु ऐसा न हो, कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिये अवसर न बने, वरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो" (गलतियों 5:13)।

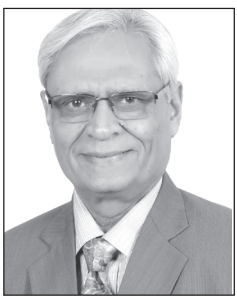

परमेश्वर की इच्छा से

सनी डेविड

इस समय बहुतेरी ऐसी बातें हो सकती है कि जिनके ऊपर कदाचित हम विचार करना चाहे। शायद आपके पास कोई पारिवारिक या व्यक्तिगत समस्या हो जिसके बारे में आप बात करना चाहें। या हो सकता है आप के पास कोई योजना हो जिसके विषय में आप विचार-विमर्श

करने के इच्छुक हों। अनेकों राजीनीति की बातें हैं, देश और विदेश की बातें हैं। शायद आप उत्सुक हो यह जानने के लिये कि चंद्रमा पर अगला रॉकेट कब जा रहा है और कितने लोग भविष्य में चंद्रमा पर पहुंचने का विचार कर रहे हैं? अनेकों और बहुतेरी बातें हैं जिनके बारे में हम देख सकते हैं। परन्तु मेरे विचार में यदि हम अपने इस थोड़े से बहुमूल्य समय का बुद्धिमानी के साथ उपयोग करना चाहें, तो सबसे अच्छा यह होगा कि हम यीशु के बारे में देखें।

लगभग दो हजार वर्ष हुए जब यीशु नाम के एक बालक का जन्म पलस्तीन देश के एक छोटे से गांव में हुआ था। यीशु के बारे में हम देखते हैं कि उसका जन्म परमेश्वर की इच्छा से हुआ था। उसके जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व अनेकों भविष्यद्वक्ताओं ने परमेश्वर की ओर से वचन पाकर लोगों को उसके जन्म के बारे में बताया था। इन भविष्यद्वाणियों के बारे में हम आज हम बाइबल के पहिले भाग, अर्थात पुराने नियम में पढ़ते हैं। भविष्यद्वक्ताओं ने न केवल यही बताया था कि यीशु का जन्म कब होगा, परन्तु उन्होंने यह भी प्रगट किया था, कि उसका जन्म किस प्रकार से होगा, और उसका पृथ्वी पर आने का क्या उद्देश्य होगा। और न केवल यही, परन्तु उन्होंने यह भी बताया था कि यीशु किस प्रकार से मारा जाएगा, और फिर तीसरे दिन वह मृतकों में से जी उठेगा, और फिर स्वर्ग में वापस उठा लिया जाएगा। और फिर, जब हम पुराने नियम की इन भविष्यद्वाणियों को पढ़ने के बाद बाइबल के दूसरे भाग, अर्थात नए नियम को खोलकर पढ़ते हैं, तो हम वास्तव में देखते हैं कि वे सारी भविष्यद्वाणियां बिल्कुल ठीक वैसे ही पूरी हुई।

यदि मैं आपको अनुमान लगाकर बताऊं कि पृथ्वी से अगला उपग्रह जब छोड़ा जाएगा तो क्या-क्या होगा, परन्तु मेरा अनुमान गलत सिद्ध हो सकता है। मान लीजिये, मैं अपने अनुमान से आपको बताऊं कि अमेरिका का अगला राष्ट्रपति कौन बनेगा, परन्तु मेरा अनुमान बिल्कुल गलत ठहर सकता है। या मान लीजिये, मैं आपको किसी राजनीतिक प्रश्न पर अपने विचार बताऊं, परन्तु मेरे विचार गलत हो सकते हैं। परन्तु ये भविष्यद्वक्ता, जिनका वर्णन अभी मैंने आपके सामने किया, लोगों को अपने अनुमान नहीं बता रहे थे, वे केवल अपने विचार मात्र ही प्रगट नहीं कर रहे थे; परन्तु वास्तव में वे पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे। (2 पतरस 1:21)। और इसीलिये उन बातों के पूरा होने के सैकड़ों वर्ष पूर्व उन्होंने जो कुछ भी कहा था, वह सब भविष्य में ठीक वैसे ही पूरा हुआ।

यूं तो यहां हम उन में से अनेकों भविष्यद्वाणियों का वर्णन कर सकते हैं, परन्तु इस थोड़े से समय में मैं विशेष रूप से आपका ध्यान यीशु से सम्बंधित एक बड़ी ही महत्वपूर्ण भविष्यद्वाणी पर दिलाना चाहूंगा। मेरी आशा है कि आप इस भविष्यद्वाणी के एक-एक शब्द को बड़े ध्यान से सुनेंगे, और फिर, इसके बाद हम हम उस वर्णन को पढ़ेगे जो इस भविष्यद्वाणी के पूरा होने के संबंध में है तो आप उस पर भी पूरा ध्यान देंगे। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि यदि आप

ऐसा करेंगे तो ये बातें यीशु को वास्तव में पहिचानने में आपके लिये सहायक सिद्ध होंगी; आप जानेंगे कि यीशु वास्तव में कौन है और उसका इस पृथ्वी पर आने का क्या उद्देश्य था, उसका आपके जीवन में क्या महत्व है।

यीशु के जन्म से लगभग आठ सौ वर्ष पूर्व, उसके संबंध में भविष्यद्वक्ता ने यूं कहा था, "जो समाचार हमें दिया गया, उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल इस पर प्रगट हुआ? क्योंकि वह उसके सामने अंकुर की नाई, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसे देखते, और न उसका रूप हो हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुखी पुरुष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उससे मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हम ने उसका मूल्य न जाना।

निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तोभी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सबके सब भेड़ों की नाई भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ बध होने के समय या भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शांत रहती है वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला। अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किसने उस पर ध्यान दिया कि वह जीवितों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी। और उसकी कब्र भी दुष्टों के संग ठहराई गई और मृत्यु के समय वह धनवान का संगी हुआ, यद्यपि उसने किसी प्रकार का उपद्रव न किया था और उसके मुंह से कभी छल की बात नहीं निकली थी।

तौभी यहोवा को यही भाया कि उसे कुचले; उसने उसको रोगी कर दिया. ... उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी। वह अपने प्राणों का दुख उठाकर उसे देखेगा ओर तृप्त होगा; अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा; और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा.... वह अपराधियों के संग गिना गया; तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ उठा लिया, और अपराधियों के लिये बिनती करता है।" (यशायाह 53)।

और अब हम देखेंगे कि यह भविष्यद्वाणी किस प्रकार आठ सौ वर्ष बाद यीशु में पूर्ण हुई। पवित्र बाइबल का लेखक इस घटना का वर्णन करके कहता है, "जब भोर हुई, तो सब सहायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के भार डालने की सम्मति की। और उन्होंने उसे बांधा और ले जाकर पौलातुस हाकिम

के हाथ में सौंप दिया।"

"जब यीशु हाकिम के सामने खड़ा था, तो हाकिम ने उससे पूछा; कि क्या तू यहूदियों का राजा है? यीशु ने उससे कहा, तू आप ही कह रहा है। जब महायाजक और पुरनिये उस पर दोष लगा रहे थे, तो उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। इस पर पीलातुस ने उससे कहा गया, क्या तू नहीं सुनता, कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियां दे रहे हैं? परन्तु उसने उस को एक बात का भी उत्तर नहीं दिया, यहां तक कि हाकिम को बड़ा आश्चर्य हुआ। और हाकिम की यह रीति थी, कि उस पर्व में लोगों के लिये किसी एक बंधुए को जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता था। उस समय बरअब्बा नाम उन्हीं में का एक नामी बंधुआ था... हाकिम ने उसने पूछा, कि इन दोनों में से किस को चाहते हो, कि तुम्हारे लिये छोड़ दूं? उन्होंने कहा बरअब्बा को। पीलातुस ने उनसे पूछा; फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है क्या करूं? सबने उससे कहा, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। हाकिम ने कहा; क्यों उसने क्या बुराई की है? परन्तु वे और भी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए" ...इस पर उसने बरअब्बा को उन के लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया कि क्रस पर चढ़ाया जाए।"

"...तब उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया.... और आने-जाने वाले सिर हिला हिलाकर उसकी निंदा करते थे।"

लेखक आगे कहता है, कि इन बातों के बाद, "दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अंधेरा छाया रहा। तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? .... तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए.... और धरती डौल गई, और चट्टाने तड़क गई.... तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भुईडोल और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यंत डर गए, और कहा, सचमुच "यह परमेश्वर का पुत्र था।"

"जब सांझ हुई तो यूसूफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य, जो आप ही यीशु का चेला था, आया; उसने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी। इस पर पीलातुस ने दे देने की आज्ञा दी। युसूफ ने लोथ को लेकर उसे उज्जवल चादर में लपेटा। और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उसने चट्टान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया।"।

और इस प्रकार उस भयानक दिन का अंत हुआ। और, फिर दूसरा दिन गुजरा। परन्तु तीसरे दिन एक बड़ी ही आश्चर्यपूर्ण घटना घटी; जिसे सुनकर सारा देश आश्चर्य में डूब गया। लिखा है, सब्त के दिन के बाद, अर्थात शनिवार के बाद, सप्ताह के पहिले दिन, जब कुछ स्त्रियां कब्र को देखने आई, तो एकाएक, "एक बड़ा भुईडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया। उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाई उज्जवल था। उसके भय से पहरुए कांप

उठे, और मृतक समान हो गए। स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो; मैं जानता हू कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। वह नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था। और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो कि वह मृतकों में से जी उठा है।"

मेरा विश्वास है, कि अब आप देख सकते हैं कि यीशु केवल एक मनुष्य मात्र नहीं था, परन्तु वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। उसने स्वयं कोई अपराध न किया था जिसके कारण वह मारा जाता, परन्तु जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा था कि "वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया।" यही परमेश्वर की योजना थी, कि यीशु के सिद्ध बलिदान से सारा जगत उद्धार पाए। स्वयं यीशु ने अपनी मृत्यु से पूर्व यूं कहा था, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। (यूहन्ना 3:16)।

अन्त में, मैं आपको यीशु की वह आज्ञा याद दिलाना चाहता हूं, जिसे उसने स्वर्ग में वापस जाने से पहिले देकर यूं कहा था "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:16)। प्रभु का अनुग्रह आप पर बना रहे।

यीशु के लोहू के द्वारा धार्मिक ठहरना

जे. सी. चोट

अपने इस अध्ययन में देखेंगे की यीशु के लोहू के द्वारा हम कैसे धर्मी ठहरायें जा सकते हैं? मनुष्य क्योंकि पापी है (रोमियों 3:23), इसलिये उसे पाप से छुटकारा पाने की आवश्यकता है। मनुष्य और परमेश्वर के बीच में पाप की दिवार खड़ी है। परमेश्वर पाप से घृणा करता हैं और जब तक यह दिवार रहेगी तब तक मनुष्य और परमेश्वर का मेल नहीं हो सकता। प्रश्न यह है कि मनुष्य और परमेश्वर के मेल कैसे हो सकता है?

मनुष्य पापी तो है, परन्तु परमेश्वर उससे प्रेम करता है और उसे नाश होते हुए नहीं देख सकता, परन्तु मनुष्य को पाप से बचाने के लिये उसे एक बलिदान की आवश्यकता थी और ऐसा बलिदान जो सिद्ध हो। परमेश्वर ने एक योजना बनाई कि वह अपने पुत्र यीशु को एक बलिदान के रूप में इस जगत में भेजगा। यीशु इस पापी जगत में आया और अपने पिता की आज्ञा मानकर क्रूस पर बलिदान हुआ। अर्थात यीशु ने अपने लहु को जगत को पापो से मुक्ति दिलाने के लिये बहाया।

यीशु के विषय में पुराने नियम में भविष्यवाणियां हुई थीं कि वह जगत में आयेगा और दुख उठाएगा, नये नियम में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने किस अद्भभुत तरीके से इस संसार में जनम लिया था। मरियम ने उसे जन्म दिया था। पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा उसका जन्म हुआ था। लिखा है कि उसका नाम यीशु होगा और वह लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।

बाइबल हमें बताती है कि इस संसार में रहकर यीशु कैसे बड़ा हुआ, वह लोगों के बीच रहकर प्रचार करता रहा। उसके एक चेले ने उसके साथ विश्वासघात किया और एक झूठे मकद्में में उसे फंसाया गया और दो डाकुओं के बीच क्रूस पर चढ़ा दिया गया। यानि पूरे संसार के लिये उसका लोहू बहाया गया। यह एक सिद्ध बलिदान था।

एक बार प्रेरित पौलुस ने कहा था, कि परमेश्वर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। (रोमियों 5:8)। पतरस कहता है हमारा छुटकारा सोने और चांदी से नहीं बल्कि यीशु के बहुमूल्य लोहू से हुआ है। (1 पतरस 1:18-21) पौलुस इसके विषय में कहता है, "हमको इसमें उसके लोहू के द्वारा अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।" (इफिसियों 1:7) यीशु ने इस बात को स्वयं कहा था "क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू हैं जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है।" (मत्ती 26:28) इस संदर्भ में जो हमने आयतों को पढ़ा, यह दिखाता है कि मनुष्य और परमेश्वर के बीच एक दिवार थी परन्तु यीशु का लोहू बहने के बाद मनुष्य और परमेश्वर के बीच की दिवार ढह गई और उनके बीच यीशु के लोहू के द्वारा मेल हो गया। आज मनुष्य यीशु के लोहू द्वारा उद्धार पा सकता है।

अब मनुष्य के लिये यह संभव हो गया है कि उसके पाप धोये जा सके और उसे पापों से मुक्ति मिल सके। परन्तु बात यह है कि यीशु के लोहू के सम्पर्क में किस प्रकार से आया जा सकता है?

बाइबल हमें सिखाती है यद्यपि यीशु के द्वारा परमेश्वर ने मुक्ति का मार्ग दिया है और वह भी उसके अनुग्रह के द्वारा परन्तु मनुष्य में इस उद्धार को पाने की इच्छा होनी चाहिए और इसके लिये कुछ शर्तों को भी मानना पड़ेगा। परन्तु उद्धार प्राप्त करने के बाद मनुष्य तब भी घमण्ड से नहीं कह सकता कि मैंने अपने उद्धार को कमा लिया है। यीशु मसीह के मारे जाने गाड़े जाने तथा जी उठने के द्वारा उद्धार संभव हो सका। यीशु ने अपने चेलों से कहा था कि सारे संसार में जाकर सुसमाचार का प्रचार करो और उन्हें चेला बनाओ। फिर उसने यह भी कहा था कि सब लोगों को बताओ कि "जो विश्वास करें और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा और जो विश्वास नहीं करेगा वह दोषी ठहराया जायेगा।" (मरकुस 16:16) एक और स्थान पर उसने कहा था कि लोगों को मन फिराना है और यीशु का अंगीकार करना है कि वह परमेश्वर का पुत्र है। (लूका 13:3 मत्ती 10:32)। फिर

जब हम प्रेरितों 2 अध्याय पर आते हैं तो देखते हैं कि पतरस लोगों को प्रचार कर रहा है और वहां लोगों को यह कहता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और जब उन्होंने पूछा कि यीशु को अपनाने के लिये हम क्या करें तो पतरस ने उनसे कहा कि, "मन फिराओ और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु के नाम से बपतिस्मा ले। (प्रेरितों 2:38)। बाद में हम पढ़ते हैं कि लगभग 3000 लोगों ने उसी दिन बपतिस्मा लिया। (प्रेरितों 2:41, 47)।

परन्तु पापों की क्षमा का यीशु के लोहू से क्या संबंध है? जब हम विश्वास करते हैं, मन फिराकर यीशु का अंगीकार करके बपतिस्मा लेते हैं तब यीशु के लोहू के सम्पर्क में आ जाते हैं और उसका लोहू हमें हमारे पापों से शुद्ध करता है। (1 यूहन्ना 1:7) जब लोग बपतिस्मा लेते हैं तो प्रभु उन्हें अपनी कलीसिया में मिलाता है। पौलुस ने अपने पापों को धोने के लिये बपतिस्मा लिया था (प्रेरितों 22:16)। कलीसिया को यीशु के लोहू से खरीदा गया है (प्रेरितों 20:28)। अर्थात यीशु ने अपनी कलीसिया के लिये अपने प्राणों को दिया था।

कुछ नैतिक विषय

डेविड फ़ार

नैतिक मसलों के फैंसले संसार के नज़रिये से नहीं होते, बल्कि वे परमेश्वर के वचन की शिक्षा के लिए जाते हैं। ऐसी बातें होती हैं जिन्हें संसार तो मान लेना चाहता है परन्तु वे बाइबल की नैतिकता तथा बाइबल के धर्म से उलट होती है।

गर्भपात गलत है क्योंकि यह किसी की हत्या है। गर्भपात का बचाव करने वाले लोग यह तर्क देते हैं कि गर्भवती माता को गर्भपात करवाने का अधिकार है क्योंकि "यह उसका शरीर है।" परन्तु यह सच नहीं है। उसके शरीर में जो बच्चा है वह एक और व्यक्ति है, जिसे नष्ट करने का उसे कोई अधिकार नहीं है। कानूनी तौर पर चाहे गर्भपात की अनुमति दे दी जाए परन्तु परमेश्वर फिर भी कहता है, "तू हत्या न करना।"

ड्रगज़ को शौकिया इस्तेमाल के लिए (उचित दवाई के रूप में नहीं) उन्हीं नियमों के द्वारा गलत ठहराया जाता है जो मादक पेय यानी शराब इत्यादि गलत ठहराते हैं। चरस, भांग, कोकीन आदि पर कई देशों में पाबंदी है परन्तु यदि वे इन्हें कानूनी दर्जा दे भी दें तौभी वे गलत होंगे क्योंकि नशा चाहे शराब का हो या किसी और ड्रग का, वह गलत ही है।

जूए को सामाजिक स्वीकृति हो सकती है परन्तु बाइबल के कई नियमों के द्वारा उसे गलत बताया गया है। जूए के पीछे की सोच लोभ है (लूका 12:15)। जूए की कमाई किसी दूसरे से छीनकर ही हो सकती है। आम तौर पर जुआ हारने वाले लोग अपने बच्चों के मुंह से ही निकालकर लाते हैं। मसीही जीवन में हम

सुनहरे नियम को मानते हैं और दूसरों की भलाई चाहते हैं और न कि उनकी हानि (मत्ती 7:12)।

पोनोग्राफी किताबों में हो, पत्रिकाओं में, या फिल्मों में या मोबाइल में हो उनकी मनाही मत्ती 5:28, 1 पतरस 2:11, और कुलुस्सियों 3:5 जैसे वचनों के द्वारा की गई है। कामुक विचार उत्पन्न करने वाली चीज, चाहे बातें हो या तस्वीरें, गलत है। बढ़ती चिंता का विषय टैलिविजन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों में कामुक चित्रों या गलत और गंदी भाषा में सांकेतिक तौर पर या स्पष्ट रूप में दिखाए जाने वाले दृश्य हैं।

गंदी भाषा आज आम है परन्तु मसीही लोगों से अपनी भाषा काबू में रखने की उम्मीद की जाती है। किसी भी प्रकार की अभिव्यक्ति जिससे परमेश्वर का नाम या मसीह का नाम व्यर्थ में लिया जाता है, गलत है (निर्गमन 20:7)। यही कारण है कि मत्ती 5:33-37 में शपथ खाने के विरूद्ध यीशु ने कठोर शब्द कहे थे। इसमें "खुदा की कसम" "मां की कसम" इत्यादि और "बाई गॉड" "जी" इत्यादि जैसी खिचड़ी भाषा है जो "जीजस" के ही विकृत रूप हैं। ऐसे और भी शब्द व अभिव्यक्तियां हैं जिनका इस्तेमाल परमेश्वर के नाम को अपवित्र करने के लिए चाहे इस्तेमाल न किया जाए, परन्तु मर्यादित लोगों की नज़र में अशिष्ट और घृणाजनक है। इफिसियों 4:29 पढ़ें।

नाश एक सामाजिक रीति है और इसके रूप हैं। इसका सबसे प्रसिद्ध रूप अनचाहे अनजान लोग रोमानी नाश में एक दूसरे के साथ नाच रहे होते हैं तो नामुमकिन है कि उनके मन में एक दूरे के प्रति गलत विचार न आएं। यही बात नाच की कुछ नई शैलियों की उत्तेजना दिलाने वाले कार्यों में हैं। कामुकता पाप है (गलातियों 5:19)।

समलैंगिकता की साफ-साफ निंदा की गई है (1 कुरिन्थियों 6:9, रोमियों 1:24, 27, लैव्यव्यवस्था 18:22)। यह दुख की बात है कि आधुनिक संसार बुराई के इस विकृत रूप को मान लेने की कोशिश कर रहा है।

लॉज और आपसी बातें और भी है और अलग-अलग हो सकती है। ऐसे कई संगठन हो सकते है कि उनमें ये बुराइयां न हों। परन्तु दूसरों में शराब, जुए इत्यादि जैसी पापपूर्ण गतिविधियां होती हैं। ऐसे संगठन भी हैं, जो कहने को धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। उनमें ऐसी शिक्षाएं और ऐसे समारोह पाए जाते हैं जो बाइबल के अधिकार के बिना है, चाहें वे दावा कर सकते हैं कि वे बाइबल पर आधारित हैं। कुछ लोग उन्हें कलीसिया का पर्याप्त विकल्प बताते हैं। हमें ऐसे किसी भी संगठन में से खासतौर पर अलग होना चाहिए जिसमें गुप्त रूप में शपथ ऐसे धार्मिक संस्कार हो जो हमारी अत्यधिक वफादारी चाहते हों या आत्मिक या अनन्त लाभ देने का वायदा करते हो।

क्या स्त्री के लिए आराधना में सिर ढांकना अनिवार्य है?

बैटी बर्टन चोट

कई ऐसे लोग हैं जिनका कहना है कि मण्डली में स्त्री के लिए कपड़े या पल्लू से सिर ढांकना अनिवार्य है। ऐसे लोग तब कुछ नहीं बोलते, जब स्त्री स्कूल में पढ़ा रही होती है, गली या बाजार में किसी से मिलने पर वचन की बात कर रही होती हैं या जब बर्तन मांजते हुए मन ही मन प्रार्थना कर रही होती हैं।

अन्य संस्कृतियों में, ऐसे लोग हैं जिनका कहना है कि उसे हर समय सिर ढक कर रखना चाहिए। कइयों का कहना है कि सिर के साथ-साथ चेहरा और पूरा तन भी ढका होना अनिवार्य है। कुछ लोग हैं जिनका कहना होता है कि सिर ढकना आवश्यक नहीं है। इस उलझन का कारण 1 कुरिन्थियों 11:2-16 में सिर होने, परम्पराओं और ओढ़नी की चर्चा की नासमझी का होना है।

विचार करने वाली बात

क्या आपके समाज में स्त्री के लिए अपने पति की अधीनता या आदर के प्रतीक घूंघट या दुपट्टे से सिर ढकना अनिवार्य है? क्या आप इस प्रथा को मानते हैं? क्या आपने पवित्र शास्त्र के इस वचन का अध्ययन किया है? यदि किया है, तो क्या आप मानते हैं कि सिर पर पल्लू रखना अनिवार्य है?

इस पाठ के आरंभ में यह ध्यान दिलाया जाना चाहिए कि 1 कुरिन्थियों 11 अध्याय में वचन कहीं पर भी यह संकेत नहीं देता कि स्त्री की पोशाक या पहरावे से संबंधित वचन सार्वजनिक आराधना के समय तक ही सीमित हो।

पहली सदी के दौरान चुनिंदा लोगों को "प्रेरितों के हाथ रखने" के द्वारा पवित्र आत्मा दिये जाने की जो प्रतिज्ञा की गई थी उसमें स्त्रियां भी थी, "..मैं अपना आत्मा सब पर उण्डेलूंगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यवाणी करेंगी" (प्रेरितों 2:17ख)।

प्रेरितों 21:9 में हम पढ़ते हैं कि फिलिप्पुस की चार कुंवारी बेटियां थीं, जो भविष्यवाणी करती थी। इसके बावजूद जैसा कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से पौलुस के द्वारा कहा गया, स्त्रियों को कलीसिया की मिली-जुली सभा में जहां पुरुष और स्त्रियां बैठे हों, सार्वजनिक रूप में बोलने की मनाही थी। "स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है" (1 कुरिन्थियों 14:34)। इस कारण फिलिप्पुस की बेटियों का भविष्यवाणी करना केवल स्त्रियों के बीच, अकेले में, घरों में और लोगों के साथ होता होगा।

इन वचनों के आधार पर जो कलीसिया में स्त्रियों की पूरी भूमिका पर प्रकाश डालते हैं, हमें निष्कर्ष निकालना होगा कि 1 कुरिन्थियों 11 में यहां स्त्री के खामोशी से या बोलकर प्रार्थना करने की सामान्य स्थितियों में जहां स्त्रियां हों, स्त्रियों के पहरावे और सिर ढकने और पवित्र आत्मा की प्रेरणा से भविष्यवाणी

करने, व्यक्तिगत और निजी चर्चाओं में उपदेश देने की बात है।

ऐसा लगता है कि अविश्वासी महिला कर्मियों से मसीही स्त्रियों के बीच में से आत्मिक कर्मी में अन्तर करने के लिए ऐसी एक रेखा खींची जा रही थी। मंदिर की वेश्याएं जहां स्थानीय प्रथाओं की अनदेखी करते हुए अपने पेशे को दिखाने के लिए नंगे सिर घूमती और अपने बाल भी मुंडवा लेती थी, वहीं पर मसीही स्त्रियों के लिए भक्तिपूर्ण और अधीनता को दिखाते हुए, विशेषकर प्रार्थना करने या भविष्यवाणी करने के आत्मिक कार्य में लगे होने पर, ऐसा पहरावा पहनना आवश्यक था जिसे बाहर के कुछ लोग केवल पुरुषों द्वारा किया जाने वाला काम ही मानते होंगे।

सामान्य प्रथा के अनुसार सिर ढक कर मसीही स्त्री स्वयं को अविश्वासी स्त्रियों से पृथक करती और इस बात की पुष्टि भी करती थी कि आत्मिक कार्य करने में भी वह कलीसिया के पुरुषों के साथ बराबरी नहीं कर रही, बल्कि अपने पति के अधीन है।

आम सोच के विपरीत ये आयतें स्त्री के समस्त कलीसिया की सभा में भाग लेने के समय स्त्री के पहरावे की बात करती हुई नहीं लगती। वास्तव में, अकेले में, दैनिक जीवन में उसकी पोशाक चाहे वैसी ही हो सकती है, जैसी मण्डली में, परन्तु इन आयतों में सार्वजनिक सभाओं की बात नहीं है। 2-16 आयतों में "इकट्ठे होने" (11:17), "जब कलीसिया में इक्ट्ठे होते हो" (11:18), "तुम जो एक जगह में इक्ट्ठे होते हो" (11:20), "कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो" (14:23), तुम इकट्ठे होते हो (14:26) की कोई बात नहीं है।

आइए अब इन वचनों पर विचार करते हैं।

1 कुरिन्थियों 11:2

"हे भाइयो, मैं तुम्हें सराहता हूं कि जो-जो परम्पराएं मैंने तुम्हें सौंपी हैं, उनका पालन करते हो।"

आरंभ में ही पौलुस ने उस विषय को, नियम की बल्कि "परम्परा" कहकर, जिस पर वह चर्चा करने वाला था, उस प्रश्न का, जो उन्होंने उससे पूछा था, परिचय दे दिया।

1 कुरिन्थियों 11:3

"परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि हर एक पुरुष का सिर मसीह है, और स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।"

"परम्परा" के विपरीत उसने कहा कि "परन्तु" और फिर अधिकार के जिस नियम पर विचार किया जाना आवश्यक था, उसे रेखांकित करते हुए उसकी परिभाषा दे दी। ठहराए हुए अधिकार से संबंधित परमेश्वर के नियम के प्रति अधीनता को (परम्परा रूप में) दिखाती होने के कारण ओढ़नी की चर्चा बाद की बात है।

इस वचन में और जो भी शिक्षा हो, हमें परमेश्वर के ठहराए अधिकार के क्रम की वास्तविकता को कभी नहीं भुलाना चाहिए। इस पर बहस करके कि चर्चा अधीन ओढ़नी कैसी हो या अधिकार का प्रतीक क्या हो, हम ईमानदारी से और नेकनीयती

से गलत निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं, जिसके लिए निश्चय ही परमेश्वर हमें क्षमा कर देगा। परन्तु हम इस स्पष्ट शिक्षा को नहीं भूल सकते कि हर पुरुष का सिर मसीह है, स्त्री का सिर पुरुष है और मसीह का सिर परमेश्वर है। इस सच्चाई की उपेक्षा करना या इसे चुनौती देना परमेश्वर के सिस्टम पर ही हमला है।

1 कुरिन्थियों 11:4-6

"जो पुरुष सिर ढके हुए प्रार्थना या भविष्यवाणी करता है, वह अपने सिर का अपमान करता है। परन्तु जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या भविष्यवाणी करती है, वह अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह मुण्डी होने के बराबर है। यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े, तो बाल भी कटा लें, यदि स्त्री के लिए बाल काटना या मुण्डना लज्जा की बात है, तो ओढ़नी ओढ़े।"

अधिकार के परमेश्वर के क्रम (परमेश्वर, मसीह पुरुष, स्त्री) को साफ-साफ बताने के बाद पौलुस यह ध्यान दिलाने लगा कि प्रार्थना करने या भविष्यवाणी करने के समय सिर ढकना या न ढकना, अपने सिर का आदर या अनादर करने के समान था। यदि पुरुष सिर ढक कर प्रार्थना करे तो उसने अपने सिर का अपमान किया (उसके अपने सिर का या मसीह का, जिसका पुरुष के ऊपर अधिकार है, यह स्पष्ट नहीं है, यह मान लेना काफी है कि मसीही पुरुष ने ऐसा अपमान नहीं करना था)।

दूसरी ओर बिना सिर ढके प्रार्थना करने वाली स्त्री अपने सिर का अपमान करती है। पुन: अपने सिर का हो या अपने पति का अपमान, मसीही स्त्री ने नहीं चाहना था कि वह दोनों में से कोई भी अपमान करने के दोषी हो।

परन्तु यह देखने के लिए कि पौलुस यहां पर कुरिन्थुस के मसीही लोगों के साथ जिस परिस्थिति की चर्चा कर रहा है उसमें एक शर्त है कि "क्या स्त्री के लिए बाल कटाना या मुण्डन कराना लज्जा की बात" है, हमें आगे पढ़ना आवश्यक है। जब तक शालीनता से परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन न हो, संस्कृति या परम्परा से तय होता कि पहरावे में किस बात को लज्जा की बात माना जाए और किसे स्वीकारा जाए।

विचार करने वाली बात

इस आयत में, इसके आधार पर कि "क्या यह लज्जा की बात है, "परमेश्वर की प्रेरणा के द्वारा पौलुस ने ओढ़नी के संबंध में नियम बना दिए। यदि किसी देश में लम्बे बाल रखने या घूंघट या पर्दे के न होने को लज्जा की बात नहीं माना जाता, तो क्या ये नियम वहां लागू होंगे?

आरंभ में जब आदम और हव्वा ने पाप किया था, और उन्हें पता चल गया था कि वे नंगे हैं, तो पवित्र शास्त्र कहता है कि परमेश्वर ने हव्वा के ऊपर आदम को सिर बनने की घोषणा की और उसने उनके नंगेपन को ढ़कने के लिए अंगरखे बनाए (उत्पत्ति 3:16, 21)।

इस घटना से हमें दो महत्वपूर्ण बातों का पता चलता है। घर में अधिकार का क्रम (जहां पुरुष सिर है, व स्त्री उसकी अधीनता में है) आरंभ ही से बना नियम है, न कि किसी विशेष इलाके की प्रथा या परम्परा और (2) परमेश्वर ने कपड़े

से हमारे शरीरों को ढकने की बात ठहरा दी ताकि हमारा नंगेपन छिप जाए। हव्वा के सिर ढकने के विषय में कुछ नहीं कहा गया। ऐसे कहा जा सकता है कि आरंभ में परमेश्वर की ओर से घूंघट को नियम नहीं बनाया गया था।

परन्तु इस अध्ययन से संबंधित, यह ध्यान देना आवश्यक है कि किसी की जीवनशैली मान्यता, नैतिकता और धार्मिक विश्वासों को दिखाने के लिए पवित्र शास्त्र के साथ-साथ लगभग हर संस्कृति के साथ जोड़ दिया गया कि बाल किस प्रकार ढके जाते थे और/या घूंघट और अन्य प्रकार की ओढ़नियां कैसी होती थी।

पुराने नियम और नये नियम की यहूदी पृष्ठभूमि में, सिर "उघाड़ने" का अर्थ या मुंडन कराना। लैव्यव्यवस्था 10:1 में जब नदाब और अबीहू अपने पाप के कारण मर गए थे तो परमेश्वर ने हारून को परम्परा के अनुसार शोक में अपना सिर "मुंडवाने" से मना किया। अय्यूब 1:20 बताता है कि जब अय्यूब को समाचार मिला कि उसके बचचे एक भयानक तूफान में मारे गए हैं तो उसने अपने वस्त्र फाड़े और अपना सिर मुंडवा दिया।

मूसा की व्यवस्था के अधीन याजक "शान और सुन्दरता के लिए" पगड़ियां (निर्गमन 28:40, 39:28) या टोपियां पहनते थे। पगड़ी पहनने के अलावा महायाजक "पवित्र मुकुट" पहनता था (29:6)। यहूदी पुरुष आज भी आराधना के समय अपने सिरों पर कुछ न कुछ पहनकर उन्हें ढकते हैं।

दूसरी ओर, कोढ़ी व्यक्ति के लिए अपना ऊपरी होंठ ढांपे हुए अपने सिर के बाल बिखेरना अनिवार्य होता था (लैव्यव्यवस्था 13:43)।

गिनती 6 अध्याय के अनुसारी नाज़ीरी मन्नत मानने वाला व्यक्ति जब तक उस मन्नत के अधीन रहता था तब तक वह अपने बाल नहीं कटवा सकता था। शिमशोन नाज़ीर ही था।

रिबका ने अपने विवाह से पहले जब इसहाक को उससे भेंट करने के लिए खेत के दूसरी आते देखा, तो उत्पत्ति 24:65 बताता है, "तब रिबका ने घूंघट लेकर अपने मुंह को ढांप लिया।" स्पष्टता किसी अविवाहित महिला की ओर से शालीनता दिखाने के लिए यह स्थानीय परम्परा थी।

फिर भी उत्पत्ति 38:14 में हम पढ़ते हैं कि जब तामार ने यहूदा को फ़ुसलाना चाहा तो उसने "अपना विधवापन का पहरावा (जिसमें स्पष्टतया घूंघट नहीं था) उतारा, घूंघट डालकर अपने को ढांप लिया।" उस समाज की संस्कृति में ऐसा लगता होगा कि घूंघट ओढ़ना वेश्या होने का प्रतीक है।

सारा और रिबका के जबर्दस्ती से मिस्र के राजा और फिलिस्तीन के राजा के जनानाखाने में ले जाए जाने का कारण हम पढ़ते हैं, "क्योंकि वह अति सुन्दर है" (उत्पत्ति 12:14, 26:7)। स्पष्ट है कि उस संस्कृति में यह आवश्यक नहीं था कि उस समय और स्थान की स्त्रियां घूंघट पहनें, जिससे कोई उनकी सुन्दरता को देख न पाए।

पहली सदी के कुरिन्थुस नगर की मूर्तिपूजक काफिर संस्कृति में भी स्त्रियां जो कि रति देवी की पुजारिनें और धार्मिक वेश्याएं होती थीं, आम तौर पर अपने बाल कटवा लेती थीं या सिर मुंडवा लेती थी, जिससे उनके पेशे का पता चलता

था। एक मसीही स्त्री के लिए सिर मुण्डवाना इन निष्कर्षों के कारण "लज्जा की बात" थी कि लोग उसके बारे में और उसके पति के साथ उसके संबंध में बारे में क्या अर्थ निकालेंगे।

कुरिन्थुस यूनानियों, रोमियों और यहूदियों सहित मिले-जुले लोगों की संस्कृति वाला शहरी था। ऐसी स्थिति में बाल बनाने के साथ-साथ घूंघट ओढ़ना भी पहचान की बात होती थी।

उसी प्रकार आज समाज के उसी विद्रोही तत्व वाली कुछ स्त्रियों द्वारा बालों के बेतुके फैशन करना एक मसीही स्त्री के लिए में जो ऐसे बाल बनाने की हिम्मत करती है, अपमानजनक बातें ही कहेगा। स्थापित प्रबंध के अधिकार के प्रति विद्रोह और उसे न मानने को दिखाने के लिए "हिप्पियों" के बाल बनाने का ढंग भी इस्तेमाल किया जाता था।

यह सच है कि पुराने और नये नियमों के बीच विभाजित करने वाली एक बड़ी रेखा है, और जो नियम एक वाचा के अधीन हैं उनका दूसरी भाषा के नियमों से कोई संबंध नहीं है। इस कारण पुराने नियम में पुरुषों के लिए लम्बे बाल और पगड़ी या टोपी पहनने की बात पढ़ने और स्त्रियों के लिए घूंघट के होने या न होने से हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि ये बातें नये नियम के मसीही लोगों के लिए निर्देशों पर कोई प्रभाव डालती हैं।

बेशक हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि (याजकों, कोढ़ियों और नाजीरों के लिए ओढ़नी के अपवाद के साथ) इनमें से अधिकतर बातें परम्परा और संस्कृति की श्रेणी में आती हुई लगती हैं। अधिकतर मामलों में बालों या टोपी के संबंध में परमेश्वर ने नियम नहीं दिया।

फिर भी प्रचलित परम्परा को ध्यान में रखते हुए पौलुस ने कुरिन्थुस के मसीही लोगों को ये निर्देश दिए:

1 कुरिन्थियों 11:7

"हां, पुरुष को अपना सिर ढांकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है; परन्तु स्त्री पुरुष की महिमा।"

उस समय और संसार के उस भाग में पाए जाने वाले रीति रिवाजों में स्पष्टतया अन्य जाति पुरुष कपड़े से या लम्बे बालों से सिर नहीं ढकते थे, विश्वासी यहूदी पुरुष चाहे ढकते होंगे; दूसरी ओर अधीन रहने वाली सम्मानित स्त्रियां बेशक ढकती थीं। कुरिन्थुस की कलीसिया में सम्भवतया समाज के अन्य जाति भाग से बने मसीही लोग अधिक थे, जिस कारण उनके समाज में पुरुषों के लिए सिर ढकने की प्रथा और स्त्रियों के लिए घूंघट ओढ़ने की प्रथा नहीं होगी।

1 कुरिन्थियों 11:8-10

"क्योंकि पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है। और पुरुष स्त्री के लिए नहीं सिरजा गया, परन्तु स्त्री पुरुष के लिए सिरजी गई हैं। इसीलिए स्वर्गदूतों के कारण स्त्री को उचित है कि अधिकार अपने सिर पर रखे।"

चर्चा आरंभ के समय में जाकर सृष्टि के क्रम के सही होने के कारण पुरुष के स्त्री का सिर होने की ओर लौट जाती है ये तथ्य स्पष्ट है, परन्तु प्रश्न उठता है:

इसका क्या अर्थ है कि "स्वर्गदूतों के कारण"? इस प्रश्न पर बहुत अध्ययन और चर्चा हो चुकी है। पक्का कोई नहीं कह सकता कि इसका अर्थ क्या था, परन्तु एक संभावना चर्चा के मुख्य भाग में मेल खाती है कि नीचे फैंका गया यह स्वर्गदूत शैतान ही था जो हव्वा के पास आया और उसने उससे परमेश्वर की आज्ञा तुड़वाई। जिस कारण हव्वा की रक्षा और सुरक्षा के लिए परमेश्वर ने उसे अपने पति के अधिकार में कर दिया जिसे हर हाल में उसके और संसार के बीच खड़ा होना था।

शैतान और उसके दुष्ट आज भी संसार में हैं और मनुष्य जाति को अभी भी भरमा रहे हैं। जो स्त्री अपने सिर यानी अपने पति के अधिकार में रहती है उसके पास अपने और शैतान के बीच कवच है। वह चाहे अपनी सुरक्षा के सूचक के रूप में घूंघट पहने या कोई और प्रतीक, या उसका कवच केवल उसका आज्ञाकारी मन है, उसे अधिकार के अधीन रहना "चाहिए।"

पुरुष और स्त्री के संबंध की और चर्चा दोनों के एक-दूसरे पर निर्भर होने को दिखाती है। आरंभ में चाहे स्त्री को पुरुष में से बनाया गया था, परन्तु परमेश्वर द्वारा ठहराए प्रजनन के प्रबंध में, पुरुषों की आगामी सब पीढ़ियों को संसार में स्त्री के द्वारा ही लाया गया है। इस प्रकार निष्कर्ष यह है कि एक-दूसरे के ऊपर निर्भरता है, यानी पुरुष और स्त्री दोनों महत्वपूर्ण है, फिर भी अन्त में सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं।

1 कुरिन्थियों 11:11, 12

"तौभी प्रभु में न तो स्त्री बिना पुरुष और न पुरुष बिना स्त्री के है। क्योंकि जैसे स्त्री पुरुष से है, वैसे ही पुरुष स्त्री के द्वारा है, परन्तु सब वस्तुएं परमेश्वर से हैं"।

1 कुरिन्थियों 11:13-15

"तुम आप ही विचार करो, क्या स्त्री को उघाड़े सिर परमेश्वर से प्रार्थना करना सोहता है? क्या स्वाभाविक रीति से भी तुम नहीं जानते, कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे, तो उसके लिए अपमान है। परन्तु यदि स्त्री लम्बे बाल रखें, तो उसके लिए शोभा है क्योंक बाल उसको ओढ़नी के लिए दिए गए हैं।"

कुरिन्थियों को चुनौती दी गई कि इस मामले में वे खुद ही विचार करें। फिर उनसे पूछा गया, "क्या स्त्री को उघाड़े सिर प्रार्थना करना शोभा देता?" फिर यह आभास देते हुए कि चर्चा घूंघट या पर्दे से हटकर दूसरी ओर जा रही है, उत्तर दिया जाता है कि स्त्री के लम्बे बाल उसकी शान हैं और उसे ओढ़नी के लिए दिए गए हैं। कइयों का सुझाव है कि हम यहां चर्चा कर रहे हैं कि पुरुष के मुकाबले स्त्री के बाल लम्बे होना, "ओढ़नी" के लिए है।

बेशक ऐसा लगता है कि पिछली आयतों में अतिरिक्त ओढ़नी की बात है, जैसा कि सम्मानित स्त्रियों द्वारा परम्परागत रूप में पहनी जाती थी। परन्तु यह आयत सुझाव देती है कि स्त्री की ओढ़नी के लिए लम्बे बाल स्वीकार्य हैं, जो

संसार में हर जगह और हर युग में सब स्त्रियों के पास होते हैं और यह स्वाभाविक ओढ़नी रीति-रिवाज या परम्परा से बदलती नहीं है।

बिना विवाद, आमतौर पर होता है कि पुरुषों के बाल स्त्रियों के बालों से छोटे होते हैं, जैसा कि यह आयत सुझाव देती है। यह एक ऐसा तथ्य है जो अपने आप में आधार होना चाहिए। इसका अर्थ यह नहीं हैं क पुरुष के बाल नहीं हो सकते या स्त्री के बालों पर कभी कैंची नहीं लग सकती। "लम्बे" के लिए यह नहीं बताया गया कि कितने सेंटीमीटर या कितने इंच होने चाहिए। इसके बजाय क्योंकि यह शरीर का एक परिवर्तनीय भाग है इसलिए बालों की लम्बाई का इस्तेमाल पुरुष और स्त्री के बीच शारीरिक भेद बनाए रखने की सहायता में किया जाना चाहिए।

शायद बाइबल के दो अलग-अलग विषयों में "जोड़ों" के बीच समानता बनाकर इसे समझाया जा सकता है :

बालों की स्वाभाविक ओढ़नी और घूंघट में और मनुष्य की स्वर-तंत्रियों के मुकाबले आराधना में गाने के साथ साजों के इस्तेमाल में।

चाहे जितने तर्क हों परन्तु व्यक्ति की स्वर-तंत्रियां उसे कहीं भी, किसी भी समय, किसी भी परिस्थिति में गाने में आराधना करने के योग्य बनाती हैं, जो कि साजों के अनिवार्य होने पर हर जगह, हर समय या हर परिस्थति में संभव नहीं होगा।

यह मानते हुए कि बालों की स्त्री वाली ओढ़नी उसे पुरुष से अलग करती है, स्त्री के लिए वही लाभ है, और घूंघट या प्रदा होने के बावजूद इस अर्थ में उसके अधीन होने का प्रतीक है।

विचार करने वाली बात

"तुम आप ही विचार करो" ...सोहता है "उचित है" "यदि" "रीति" जैसे शब्दों से संकेत मिलता है कि नियम के बजाय इसे स्थानीय परम्परा को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने को कहा गया है।

उनके लिए जो जिद करते हैं इन वचनों में सिर ढकने के लिए पल्लू का होना अनिवार्य बताया गया है, क्या इस समझ का समर्थन करने वाला कोई हवाला है? आयतों को इक्ट्ठा मिलाने पर एक स्पष्ट समझ बनाने के लिए परमेश्वर किसी विषय पर एक से अधिक जगह पर समझाता है।

दो और बातें प्रासंगिक हैं।

और कोई वचन तो नहीं है जो कलीसिया में स्त्रियों के सिर ढकने के इस्तेमाल की आज्ञा देता हो, परन्तु एक अजीब खामोशी है, यदि पौलुस संस्कृति के नियम के बजाय सामान्य नियम की बात कर रहा था तो स्थानीय संस्कृति के दैनिक जीवन को लेने के विचार (जब तक यह परमेश्वर के नियम से उलझता न हो) मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन को खाने से संबंधित (1 कुरिन्थियों 8:10), मसीह में स्वतंत्रता (गलातियों 5:13-15) विवाह करने या अविवाहित रहने की छूट (1 कुरिन्थियों 7), यहूदी रीति-रिवाजों को मानने (या न मानने) (प्रेरितों 16:3, गलातियों 2:3-5; प्रेरितों 21:18-26) की बात की गई है।

मसीही लोगों को जैसा कि मत्ती 23:5 में यीशु द्वारा अपने ताबीजों को चौड़ा करने के संबंध में चेतावनी दी गई थी और अध्याय 5 में मनुष्यों को दिखाने के लिए उपवास रखने और प्रार्थना करने के संबंध में चेतावनी दी गई थी।

1 कुरिन्थियों 11:13-15 का अर्थ यह है कि परमेश्वर नहीं चाहता कि पुरुष स्त्रियों जैसे दिखाई देकर उसका अपमान करें; न ही वह किसी मसीही से अपने बाल कटवाकर या मुण्डन बनाकर, जो कि उस समय मंदिर की वेश्या की पहचान थी या पुरुष जैसी दिखाई देकर, "उघाड़े" होने के द्वारा अपने पति का अपमान करे।

स्त्री-पुरुष के पहरावे का यह विशेष प्रश्न "संस्कृति" की बदलती हुई सनकों के कारण नहीं है। यह पुरुष और स्त्री की भूमिकाओं के संबंध में अधिकार के परमेश्वर के नियमों पर आधारित है और ऐसा लगता है कि इसका आरंभ आदम और हव्वा के समय से ही हुआ है। परन्तु बालों की प्राकृतिक ओढ़नी के अलावा पर्दे, घूंघट को पहनने या पल्लू लेने का प्रश्न स्थानीय संस्कृति का मामला है, जो समय के साथ बदल सकता है।

आज यदि संस्कृति ऐसी है कि घूंघट ओढ़े बिना स्त्री को अनैतिक या अपने पति के लिए अपमान दिखाने वाली माना जाता है तो स्थानीय संस्कृति को चुनौती देने के बजाए उसका सम्मान करने में समझदारी है। या यदि अपने पति के प्रति पत्नी की आधीनता को दिखाने के लिए किसी संस्कृति में किसी और "प्रतीक" का इस्तेमाल किया जाता है तो उस प्रथा को मानने को प्राथमिकता दी जाए ताकि "किसी विरोधी को बदनाम करने का अवसर न दें" (1 तीमुथियुस 5:14)।

दूसरी ओर यदि किसी संस्कृति में घूंघट या हैट प्रासंगिक नहीं है तो उसे पहनना बेकार होगा क्योंकि यह मसीही व्यक्ति का तमाशा ही बनाएगा। हमें अपने प्रति ऐसा अनुचित आकर्षण नहीं बनाना चाहिए। (मत्ती 6:5, 16)।

1 कुरिन्थियों 11:16

"परन्तु यदि कोई विवाद करना चाहे तो यह जान ले कि न हमारी और न परमेश्वर की कलीसियाओं की ऐसी रीति है।"

क्या पौलुस यह कह रहा है कि "संसार भर में हमारी, जो मसीह की कलीसियाओं के लोग हैं, ओढ़नी को उतारने की कोई प्रथा नहीं है"? या वह कह रहा है कि "संसार भर में हमारी, जो कि मसीह की कलीसियाओं के लोग हैं, सिर ढकने की कोई प्रथा नहीं है"? क्या पौलुस यह कह रहा है कि इसमें झगड़ा करने वाली कोई बात नहीं है? या पूरे प्रश्न को "प्रथा" में बांट रहा है?

संक्षेप में, ऊपर दी गई सभी बातों पर फिर से विचार करते हैं:

1. पूरा हवाला परमेश्वर द्वारा ठहराए अधिकार के क्रम की बात कर रहा है। मसीह का सिर परमेश्वर है, पुरुष का सिर मसीह है, स्त्री का सिर पुरुष है। पुरुष को स्त्री के लिए नहीं सृजा गया था, बल्कि स्त्री को पुरुष के लिए सृजा गया था। पुरुष परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है। जबकि पुरुष की पसली से बना होने के कारण स्त्री पुरुश की महिमा है।
2. दूसरी बड़ी बात यह है कि पुरुष और स्त्री के पहरावे में स्पष्ट अन्तर होना

आवश्यक है। प्रकृति भी सिखाती है कि यदि किसी पुरुष के लम्बे बाल हैं तो यह उसके लिए अपमान की बात है, परन्तु यदि स्त्री के बाल लम्बे हैं तो यह उसकी शान है।

3. स्त्री के बाल उसे ओढ़नी के लिए दिए गए हैं। बालों की ओढ़नी परमेश्वर की ओर से दी गई है।
4. बालों की ओढ़नी परमेश्वर की ओर से दी गई है। घूंघट की अतिरिक्त ओढ़नी अलग-अलग परम्पराओं या प्रथाओं को मानने पर आधारित होगी, न कि वचन पर आधारित।
5. इस बात पर जोर देना कि हर संस्कृति में सब मसीही स्त्रियों द्वारा पूरा सिर ढकना अन्य वचनों के नियमों का उल्लंघन होगा, जहां मसीही लोगों को ऐसे व्यवहार करने की मनाही की गई जिससे लोगों का ध्यान उनकी ओर बिना कारण खिंचे।

एक आत्मा का महत्व

जॉन स्टेसी

आज हम एक ऐसे समय में रहते हैं जिसमें शरीर को आत्मा से भी अधिक महत्व दिया जाता है। यह एक ऐसा युग है जिसमें शारीरिक सुविधाओं पर अत्याधिक ध्यान दिया जाता है। शरीर की ओर बहुत अधिक ध्यान देने के कारण मनुष्य अपनी आत्मा के महत्व को भूल चुका है। शैतान ने इंसान की आंखों पर ऐसा पर्दा डाल रखा है, कि वह अपनी आत्मा के महत्व को देख ही नहीं पाता। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 4:4 में कहा था, "और न अविश्वासियों के लिये, जिनकी बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।" शैतान अर्थात इस संसार का ईश्वर इस बात का पूरा प्रयत्न कर रहा है कि पृथ्वी पर लोग अपनी आत्माओं के विशाल महत्व को न पहचान पाएं।

एक आत्मा के विशाल महत्व को सबसे पहले इस बात में देखा जा सकता है कि उसे परमेश्वर ने बनाया है। उत्पत्ति 1:27 में लिखा है, तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की।" क्योंकि मनुष्य को परमेश्वर ने स्वयं अपनी ही समानता पर बनाया था इसलिये मनुष्य पृथ्वी पर सभी अन्य प्राणियों से भिन्न और उत्तम है। कई बार लोग किसी प्रसिद्ध कारीगर की बनाई किसी वस्तु को प्राप्त करके अपने पास रखना चाहते है। दो तीन सौ वर्ष पुरानी किसी कलाकृति को प्राप्त करने के लिये वे ढेर सारा रुपया खर्च कर देते हैं। तौभी बहुत ही थोड़े लोग इस बात को समझ पाते हैं, कि उनकी आत्मा को सबसे महान कारीगर ने परमेश्वर के स्वरूप पर अनन्तकाल के लिये बनाया था।

दूसरी बात यह है, कि बाइबल में शरीर से भी अधिक बल आत्मा पर दिया

गया है। यीशु ने मत्ती 10:28 में इस प्रकार कहा था, जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना, पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। पौलुस ने 1 तीमुथियुस 4:8 में कहा था, कि देह की साधना से कम लाभ होता है, पर भक्ति सब बातों के लिये लाभदायक है।

एक अन्य स्थान पर, यीशु ने कहा था कि एक आत्मा का महत्व सारे जगत के महत्व से भी बढ़कर है। मत्ती 16:26 में यीशु ने कहा था, यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा? यदि मनुष्य को सारा जगत भी मिल जाए तौभी उसे संतोष नहीं मिलेगा। सुलैमान जिसके पास जगत का सब कुछ बहुतायत से था, अपने जीवन के अंत में, सभोपदेशक 12:13 में कहता है कि, परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है।

तीसरे, क्योंकि यीशु ने आपकी आत्मा को बचाने के लिये अपनी जान दी थी, इसलिये आपकी आत्मा बड़ी ही मूल्यवान हैं परमेश्वर ने इस बात की प्रतीक्षा नहीं की, कि मनुष्य एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता को अनुभव करके उसे स्वयं पुकारे। पर उसने पहल करके मनुष्य को एक ऐसा मार्ग प्रदान किया जिसके द्वारा वह पाप के भयानक परिणाम से बचकर उद्धार पाए।

क्या आपने इस बात पर कभी विचार करके देखा है, कि जब यीशु पहली बार अपने स्वर्गीय पिता को छोड़कर इस पृथ्वी पर आया था तो उसे कैसा अनुभव हुआ होगा? लूका 19:10 में यीशु ने कहा था कि, मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया है। मसीह की मृत्यु यह दिखाती है कि एक भी आत्मा महत्वरहित नहीं है। फिर, बाइबल हमें यह सिखाती है कि हम अपनी आत्माओं को परमेश्वर को सौंप दें। पतरस ने यीशु के बारे में कहा था कि वह अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। (1 पतरस 2:23)। यीशु जब क्रूस पर था तो उसने, लूका 23:46 में, कहा था कि, "हे पिता मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूं।" फिर 1 पतरस 4:19 में पतरस ने कहा था कि जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं, वे भलाई करते हुए अपने-अपने प्राण को विश्वास योग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें।

अंत में, सुलैमान के उस कथन, को हम याद रखें, जो उसने सभोपदेशक 12:7 में कहा था, अर्थात "तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास, जिसे उसने दिया है, लौट जाएगी।" आपकी आत्मा क्योंकि वापस परमेश्वर के पास चली जाएगी इसलिये यह इस बात का प्रमाण है कि आपकी आत्मा मूल्यवान है। मनुष्य की आत्मा के विशाल महत्व को इस बात से भी देखा जा सकता है कि यीशु ने कहा था, कि वह उसके रहने के लिये एक जगह तैयार करने जा रहा है। किन्तु, जो आत्माएं अपने पापों के साथ ही लौट जाएंगी उन्हें परमेश्वर से दूर होकर अनन्तकाल के विनाश के दण्ड का सामना करना पड़ेगा।

मैं चर्च ऑफ़ क्राईस्ट का सदस्य क्यों हूं?

क्योंकि इसका नाम पवित्र शास्त्र में से है

लिरॉय ब्राउनलो

क्या नाम में कुछ है?

यह विचार कि नाम से कुछ फर्क नहीं पड़ता, एक प्रसिद्ध शिक्षा है, जो न तो पवित्र शास्त्र और न तर्क से मेल खाती है।

1. नाम में इतना कुछ है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को नाम दिया। उसने "उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम रखा" (उत्पत्ति 5:2)˙ नाम में कुछ तो है, वरना परमेश्वर उनका नाम न रखता।

2. यदि नाम में कुछ नहीं है, तो बताएं कि परमेश्वर ने अब्राम का नाम "अब्राहम" और सारै का नाम "साराह" क्यों रखा था (उत्पत्ति 17:5, 15)। नाम का इतना महत्व है तभी तो परमेश्वर ने उनके नाम बदल दिए।

3. फिर, नाम के साथ इतना महत्व जुड़ा है कि परमेश्वर ने याकूब का नाम बदलकर "इस्राएल" रख दिया (उत्पत्ति 32:27, 28)। यह कहना कि नाम में कुछ नहीं है, परमेश्वर की बुद्धि पर दोष लगाना और उस पर मूर्खता तथा बेकार के काम करने का आरोप लगाना है।

4. पौलुस ने मनुष्यों के और फूट डालने वाले नामों की निंदा यह कहकर की कि "क्या मसीह बंट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया? या तो तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला" (1 कुरिन्थियों 1:13)। फिर पौलुस या किसी दूसरे मनुष्य का नाम क्यों लें? पौलुस ने कहा, "मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं, कि क्रिस्पुस और गयुस को छोड़ मैंने तुम में से किसी को भी बपतिस्मा नहीं दिया। कहीं ऐसा न हो, कि कोई कहे, कि तुम्हें मेरे नाम पर बपतिस्मा मिला" (1 कुरिन्थियों 1:14, 15)। यदि नाम से कुछ नहीं होता तो पौलुस ने मनुष्य द्वारा दिए गए नामों की निंदा क्यों की?

5. नाम का इतना ज्यादा महत्व होता है कि लोग अपने कुत्तों का नाम अलग, जानवरों और पक्षियों का नाम अलग और अपने बच्चों का नाम अच्छा सा चुनकर रखते हैं। यदि नाम से कुछ फर्क नहीं पड़ता तो लोग बच्चों का नाम कुत्तों जैसा और "लूसिफर" क्यों नहीं रख देते?

6. यदि आपको अभी भी लगता है कि नाम से कुछ फर्क नहीं पड़ता, तो मान लीजिए कि आप किसी भद्रपुरुष को "यहूदा इस्करयोती," देश द्रोही या आग लगाने वाला" कहते हैं, या किसी सच्चे आदमी को "झूठा", या अच्छे नागरिक को "अपराधी" कहकर देखें तो आपको यह समझने में अधिक समय नहीं लगेगा कि नाम में सचमुच ही कुछ हैं।

कलीसिया को क्या कहा जाता था

कलीसिया का कोई विशेष नाम नहीं है, परन्तु इसे कई विशिष्ट नामों से जाना जाता है। इसे कहा जाता है :

1. "अपनी कलीसिया" (मत्ती 16:18)। यीशु ने इसे अपनी कहा, इसलिए यह

मसीह की ही कलीसिया है।

2. "कलीसिया" (प्रेरितों के काम 8:1)। कलीसिया शब्द यूनानी के "एक्लेसिया" शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ बुलाए हुए लोगों का एक समूह है। प्रभु का ऐसा केवल एक ही समूह है और इसे "कलीसिया" कहा जाता है।

3. "परमेश्वर की कलीसिया" (1 कुरिन्थियों 1:2)। इससे स्वामित्व का पता चलता है। उदाहरण के लिए मिस्टर ब्राउन के घर को मिस्टर ब्राउन का घर ही कहा जाएगा।

4. "मसीही की कलीसियाएं" (रोमियों 16:16)। लेखक यहां अलग-अलग स्थानीय कलीसियाओं या मण्डलियों की बात कर रहा था। इससे उनके मसीह की होने का पता चलता है।

5. "मसीह की देह" (इफिसियों 4:12)। देह जो मसीह की है।

6. "जीवते परमेश्वर की कलीसिया" (1 तीमुथियुस 3:15)। स्वामित्व का संकेत देता है।

7. "पहिलौठे की कलीसिया" (इब्रानियों 12:23)। उनकी कलीसिया, जिन्होंने पहले मसीह का सुसमाचार ग्रहण किया, यानी पहिलौठों या पहले फलों की।

पवित्र शास्त्र की भाषा में मसीह की कलीसियाओं के सदस्यों को कलीसिया कहा जाता है। दूसरे गुटों को कहा जाता है? आप प्रार्थना भवनों के बाहर स्वयं ही देख सकते हैं। आपको ऐसे नाम मिलेंगे, जो बाइबल में नहीं मिलते। यह अजीब बात है कि जो लोग धार्मिक होने का दावा करते हैं, वे किसी ऐसे नाम या पदनाम को अपनाते हैं, जो बाइबल से बाहर है। क्या यह परमेश्वर, मसीह और बाइबल का अपमान नहीं है?

सदस्यों को क्या कहा जाता था

हम पाते हैं कि सदस्यों को कई विलक्षण और विशेष नामों से बुलाया जाता था, जैसे-

1. "चेले" (प्रेरितों के काम 20:7)। इसका अर्थ सीखने वाले या अनुयायी है। यह संज्ञा शब्द हैं और उसे दर्शाने के लिए है, जिसके वे चेले हैं। यूहन्ना के चेलों (मत्ती 9:14), फरीसियों के चेलों (मरकुस 2:18) और मूसा के चेलों (यूहन्ना 9:28) के अलावा हम मसीह के चेलों के बारे में पढ़ते हैं।

2. "पवित्र लोग" (1 कुरिन्थियों 1:2)। उन्हें यह इसलिए कहा जाता था, क्योंकि उन्हें पिछले पापों से उद्धार मिल गया था, जीवन में पवित्र थे और मसीह के सुसमाचार के द्वारा पवित्र किए गए या अलग किए गए थे।

3. "परमेश्वर के प्यारे" (रोमियों 1:7)। जिनसे परमेश्वर प्रेम करता था।

4. "भाई" (1 कुरिन्थियों 15:6)। एक-दूसरे के साथ उनके संबंध को दिखाता है। मसीह में भाई हुए बिना लोग खून के द्वारा क्लबों में एक-दूसरे के भाई हो सकते हैं; परन्तु वे मसीह में भाई नहीं हैं।

5. "परमेश्वर के पुत्र" (रोमियों 8:14)। परमेश्वर के साथ उनके संबंध को ध्यान में रखते हुए उन्हें यह नाम दिया गया था।

6. "परमेश्वर की संतान" (1 यूहन्ना 3:1)। परमेश्वर के साथ संबंध को दिखाता है।

7. "परमेश्वर के वारिस" (रोमियों 8:17)। यह इस बात को दिखाता है कि वे परमेश्वर से मीरास पाएंगे।

8. "राजपदधारी या "याजक" (1 पतरस 2:9)। हर मसीही याजक है, क्योंकि वह "ऐसे आत्मिक बलिदान" चढ़ाता है, जो महायाजक अर्थात "यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को ग्राह्य हैं" (1 पतरस 2:5; इब्रानियों 8:1, 2)।

9. "मसीही" (प्रेरितों 11:26)। यह व्यक्तिवाचक संज्ञा है और अन्तर स्पष्ट करने के लिए इसके लिए शब्दों की आवश्यकता नहीं है। नाम से ही पता चल जाता है कि उद्धार पाए हुए व्यक्ति का मसीह से संबंध है।

(1) कुछ लोगों ने यह कहते हुए कि यह नाम तो केवल मजाक में दिया गया था, इसके महत्व को कम करने का प्रयास किया है। पर यह नाम ईश्वरीय अधिकार के द्वारा दिया गया था। यशायाह ने भविष्यवाणी की थी, "जब अन्य जातियां तेरा धर्म और सब राजा तेरी महिमा देखेंगे; और तेरा एक नया नाम रखा जाएगा, जो यहोवा के मुख से निकलेगा" (यशायाह 62:2)। उन्हें नया नाम तब तक नहीं मिलता था, जब तक अन्य जातियों ने परिवर्तित होकर परमेश्वर की धार्मिकता को नहीं देख लेना था। प्रेरितों के काम 10 अध्याय में हम अन्य जातियों के मन परिवर्तन के बारे में पढ़ते हैं, जहां कुरनेलियुस और उसके घराने का मन परिवर्तन हुआ था। अगले अध्याय (11:26) में हम पढ़ते हैं कि "चेले सबसे पहले अन्ताकिया में ही मसीही कहलाए।" यह एक नया नाम था और अन्य जातियों द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता को देख लेने के बाद ही दिया गया था। यदि यह वह नया नाम नहीं है, जो यहोवा द्वारा दिया जाना था, तो कृपया बताएं कि फिर वह कौन सा नाम है।

(2) राजा अग्रिप्पा के सामने पौलुस द्वारा प्रचार करने के बाद राजा कह उठा था, "तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?" (प्रेरितों 26:28)। पौलुस की इच्छा और प्रयास हर व्यक्ति को यही बनाने का था। प्रिय पाठक आप के लिए पवित्र आत्मा की इच्छा कुछ और बनने की नहीं है।

(3) पतरस कहता है, "यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे" (1 पतरस 4:16)। किसी और नाम को अपनाकर हम इस नाम में परमेश्वर की महिमा नहीं कर सकते। यह एक स्पष्ट आज्ञा है और जो इसे नहीं मानते, वे पाप के दोषी हैं।

(4) आकाश के नीचे लोगों में कई और नाम हैं, पर प्रेरितों 4:12 पढ़ें, "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरितों 4:12)। कितनी खतरनाक चेतावनी है। क्या आप इस चेतावनी पर ध्यान देंगे?

किसी के साथ जुड़े मसीही

मैं जानता हूं कि प्रभु के काम में मैथड (या ढंग) और सिस्टम होना आवश्यक है, परन्तु मैं मैथोडिस्ट नहीं हूं; मण्डली के काम की निगरानी के लिए बिशपों (यूनानी शब्द एपिस्कोपोस) का होना आवश्यक है, परन्तु मैं एपिस्कोपेलियन (भारत में एंग्लीकन) नहीं हूं; ऐल्डरों (यूनानी शब्द प्रेसब्युट्रोस) का होना आवश्यक है, जो मण्डली पर अधिकार चलाने और उसकी निगरानी करने के लिए अध्यक्ष होते हैं, पर मैं प्रेसबिटेरियन नहीं हूं; हर मण्डली स्वतंत्र होनी आवश्यक है, परन्तु मैं स्वतंत्र नहीं हूं; बपतिस्मे के लिए डुबकी आवश्यक है, परन्तु मैं बैपटिस्ट नहीं हूं; मसीह का

आगमन होगा, परन्तु मैं एडवेंटिस्ट नहीं हूं; कलीसिया विश्वव्यापी या कैथोलिक है, पर मैं कैथोलिक नहीं हूं। कई भले मानकों के अनुसार क्योंकि मैं ऊपर दिए गए को मानता हूं, तो क्या मुझे अपने आप को मैथोडिस्ट एपिस्कोपेलियन प्रेसबिटेरियन स्वतंत्र बैपटिस्ट होलिनेस कैथोलिक क्रिश्चियन कहलाना चाहिए? साथ जुड़ने वाला शब्द और वह भी लम्बा सा नाम। इसकी भी आवश्यकता नहीं है। बाइबल में हम पाते हैं कि चेलों को मसीही कहा जाता था, पर यह कहीं नहीं मिलता कि किसी को किसी डिनोमिनेशन से जुड़ा मसीही कहा जाता था। दूसरे लोग चाहे जिस भी नाम से कहलाना चाहें, मैं तो बाइबल की बात मानकर केवल मसीही बनना और कहलाना ही पसंद करता हूं क्योंकि मसीही नाम बाइबल अनुसार है।

यीशु परमेश्वर है

जैरी बेट्स

खुदाई की खूबियां यीशु के लिए इस्तेमाल की जाती हैं

यीशु परमेश्वर की तरह ही अनन्त है। यशायाह 9:6 में यशायाह ने लिखा है "क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है, और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अदभुत युक्ति करने वाला पराक्रमी अनन्तकाल का पिता, और शांति का राजकुमार रखा जाएगा।" ये सभी नाम बाइबल में अन्य जगहों पर खुदा के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। इब्रानियों 1:8 को भजन संहिता 45:6 से लिया गया है, "हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा।" भजन संहिता 45 साफ-साफ खुदाई की बात है और पुत्र स्वर्गदूतों से बड़ा है; इस प्रकार हमारे पास यीशु के खुदा होने का एक और प्रमाण है क्योंकि उसने सब वस्तुओं को सृजा (कुलुस्सियों 1:16-17)।

यीशु के सर्वशक्तिमान होने की घोषणा की गई है। यूहन्ना 1:3 यह घोषणा करता है कि हर वस्तु की सृष्टि वचन ने की। जिसने सब कुछ बनाया है वह परमेश्वर है (इब्रानियों 3:4); इस प्रकार क्योंकि यीशु ने सब कुछ सृजा इसलिए वह परमेश्वर या खुदा है। इसके अलावा कुलुस्सियों 1:16 में पौलुस घोषणा करता है "क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, चाहे स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी क्या सिंहासन क्या प्रभुताएं, क्या प्रधानताएं, क्या अधिकार, सारी वस्तुएं उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई है।" यीशु से सब कुछ सृजा इसलिए यीशु परमेश्वर ही है।

यीशु सब कुछ जानता था। यूहन्ना 2:24, 25 में यूहन्ना लिखता है, "परन्तु यीशु ने अपने आप को उनके भरोसे पर नहीं छोड़ा, क्योंक वह सब को जानता था; और उसे आवश्यकता न थी कि मनुष्य के विषय में कोई गवाही दे, क्योंकि वह आप ही जानता था कि मनुष्य के मन में क्या है?" साफ है कि मनुष्य के मन की बातें केवल परमेश्वर जान सकता है; इसलिए यीशु को परमेश्वर घोषित किया गया है।

ईश्वरीय काम यीशु के लिए इस्तेमाल किए गए

यूहन्ना 6 अध्याय में 5,000 लोगों को खिलाने के बाद उसने कहा कि जीवन की रोटी वह है (यूहन्ना 6:48, 51,53-58)। इसका अर्थ यह है कि आत्मिक रोटी

के रूप में यीशु आत्मिक जीवन को बरकरार रखता है। अब तक कोई मनुष्य यह दावा नहीं कर पाया। यूहन्ना 11:25-26 में यीशु ने कहा कि वह पुनरुत्थान और जीवन है, और फिर अपने इस दावे को साबित करने के लिए उसने लाजर को मुर्दों में से जिलाया। इसका अर्थ यह भी होगा कि उसके पास जीवन देने की सामर्थ है। "जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी उन्हें चाहता है, उन्हें जिलाता है" (यूहन्ना 5:21)। जीवन केवल परमेश्वर दे सकता है, इसका अर्थ यह हुआ कि यीशु भी परमेश्वर है। यीशु ने सब्त के दिन प्रभु होने का दावा किया (मत्ती 12:8)। सब्त का दिन तो परमेश्वर ने बनाया था इसलिए केवल परमेश्वर ही सब्त का प्रभु हो सकता था।

कई जगह पर यीशु ने परमेश्वर के साथ बराबर होने का दावा किया। उसने कहा, "मैं और पिता एक है" (यूहन्ना 10:30)। यह कहने का उसका अर्थ यह था कि वह परमेश्वर के साथ बराबर आदर का हकदार है। यहूदी लोगों को स्पष्ट समझ थी कि वह दावा करने का क्या अर्थ है, इसीलिए उन्होंने उसे मार डालने के लिए पत्थर उठा लिए। जब यीशु की पेशी हो रही थी तो महायाजक ने उससे साफ-साफ पूछा था कि क्या वह "परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती 26:63-64)। शपथ दिलाए यीशु ने कहा, "हां, मैं हूं।" उसने पापों को क्षमा करने की सामर्थ होने का दावा किया और हर किसी को मालूम था कि पाप केवल परमेश्वर क्षमा कर सकता है। मरकुस 2:1-12 में उसने लकवे के एक रोगी को यह कहने के बाद कि उसके पाप क्षमा हुए, चंगा कर दिया। केवल परमेश्वर ही आदमी को चंगा कर सकता था। इसलिए उस आश्चर्यकर्म से यीशु का दावा सच साबित हुआ। यीशु ने सब लोगों का न्याय करने वाला होने का दावा भी किया। "पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है" (यूहन्ना 5:22)।

ईश्वरीय आराधना यीशु के लिए थी

यूहन्ना 9 अध्याय में यीशु ने जन्म के एक अंधे को चंगाई दी थी। थोड़ी देर बाद यीशु ने फिर उससे बात की और उससे पूछा कि क्या वह मनुष्य के पुत्र पर विश्वास रखता है? उसने पूछा कि मनुष्य का पुत्र कौन है? तब यीशु ने यह ऐलान किया कि वही मनुष्य का पुत्र है, और उस आदमी के जवाब पर ध्यान दें कि उसने क्या कहा। "हे प्रभु, मैं विश्वास करता हूं और उसे दण्डवत किया" (यूहन्ना 9:38)। मत्ती 14:33 में ऐसी ही एक घटना मिलती है। "इस पर उन्होंने जो नाव पर थे (यानी चेलों ने) उसे दण्डवत करके कहा, सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है। यीशु ने दण्डवत स्वीकार किया जो कि एक उत्साही यहूदी कभी नहीं करता। हर यहूदी इस बात की समझ रखता था कि दण्डवत किए जाने का हकदार केवल परमेश्वर है। यीशु ने कभी दण्डवत स्वीकार नहीं करना था और न ही चेलों ने उसे दण्डवत करना था यदि वह परमेश्वर न होता। हम परमेश्वर को स्वर्गदूतों को पुत्र को दण्डवत करने की आज्ञा देते भी पढ़ते हैं। इब्रानियों 1:6 पर ध्यान दें "और जब पहलौठे को जगत में लाता है तो कहता है, "परमेश्वर के सब स्वर्गदूत उसे दण्डवत करे।" यह आयत व्यवस्थाविरण 32:43 से ली गई है। पहलौठा स्वाभाविक ही है कि परमेश्वर के पुत्र या यीशु को कहा गया है। परमेश्वर स्वर्गदूतों को किसी को जो परमेश्वर नहीं है दण्डवत करने की आज्ञा नहीं देता।